[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2358 **H**

Unique Paper Code : 62054408

Name of the Paper : Anya Gadya Vidhayein

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi Discipline**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. 'साहित्य का उद्देश्य' के मूल कथ्य पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

'भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीयता' निबंध में निहित उद्देश्य पर विचार कीजिए।

P.T.O.

2. भक्तिन में चित्रित स्त्री समस्या पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

'अदम्य जीवन' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

3. 'वैष्णव जन' व्यंग्य की दृष्टि से बेजोड़ रचना है – विवेचना कीजिए। (12)

अथवा

'शायद' एकांकी के कथानक को अपने शब्दों में लिखिए।

4. 'उखड़े खंभे' में किस-किस पर व्यंग्य किया गया है ? उदहारण सहित लिखिए। (12)

अथवा

लक्खा बुआ शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3)

(क) भाषा का विकास क्रमिक रूप से होता है और उसका स्वाभाविक विकास उसमें लिखे साहित्य से नहीं बल्कि उसके सामान्य प्रयोग

से होता है। या यूं कहिए कि किसी भाषा की व्यापकता और उसके प्रभाव का पता उस भाषा में लिखे साहित्य से नहीं चलता बल्कि इस बात से चलता है कि जन जीवन में उस भाषा का कितना प्रयोग हो रहा है। किसी भी भाषा में साहित्य लिखने और पढ़ने वाला वर्ग बहुत सिमित होता है जबकि उसको बोलने वाला वर्ग कहीं बड़ा होता है।

(ख) भक्तिन के संस्कार ऐसे हैं कि वह कारागार से वैसे ही डरती है जैसे यमलोक से। ऊँची दीवार देखते ही वह आँख मूंदकर बेहोश हो जाना चाहती है। उसकी यह कमजोरी इतनी प्रसिद्धि पा चुकी है कि लोग मेरे जाने की सम्भावना बता-बताकर उसे चिढ़ाते रहते हैं। वह डरती नहीं, यह कहना असत्य होगा, पर डर से भी अधिक महत्त्व मेरे साथ का ठहरता है।

(ग) मैं देख रहा था, जिनके शरीर में केवल हडिड्याँ शेष थीं, आज भी उनमें जीवित रहने का साहस था। अकाल आया, बीमारी आई और फिर दूसरे अकाल की गहरी आँधी की क्षितिज पर सिर उठाने लगी है, किन्तु अविचिलित हैं यह ! किसलिए? इसीलिए न कि यह जनता किसी से भी दब नहीं सकती। एक दिन विजेताओं ने इन्हें कुचला था, आज भी मनुष्य का स्वार्थ और भीषण व्यापार इन्हें निचोड़ रहा है, किंतु यह तो अभी तक अदम्य अविजेय हैं।

(घ) राजा ने कहा, "कहा है तो उन्हें खम्भों पर टांगा ही जाएगा। थोड़ा समय लगेगा। टांगने के लिये फन्दे चाहिए। मैंने फन्दे बनाने का आर्डर दे दिया है। उनके मिलते ही, सब मुनाफाखोरों को बिजली के खम्भों से टांग दूंगा। भीड़ में से एक आदमी बोल उठा, "पर फन्दे बनाने का ठेका भी तो एक मुनाफाखोर ने ही लिया है"। राजा ने कहा, "तो क्या हुआ? उसे उसके ही फन्दे से टांगा जाएगा"।

(ङ) प्रेम के साथ सभी को क्षुद्र से क्षुद्र को भी, यहाँ तक कि जिसे अछूत भी न छुएगा ऐसे व्यक्ति को भी छाती से लगा लेने वाली अहिंसा की अभिव्यक्ति। स्वाधीनता संग्राम के गंभीर क्षणों में भी शास्त्री जी के कोढ के घाव उनके नेत्रों के सामने घूमते रहते थे। वे रोज अपने हाथों से उन घावों को साफ करते और शरीर की मालिश करते।